Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 4 | ISSN : 2581- 6306

सल्तनतकालीन मिथिला की लोक संस्कृति

विजय कुमार मिश्रा
S/o- बैद्यनाथ मिश्र
ग्राम–लदारी, पो0–समैला लालगंज
भाया–केवटी, जिला–दरभंगा, बिहार

सार :

मैथिली में लोकगाथा शैली अति प्राचीनकाल से प्रचलित रही है। विभिन्न जाति के ऐतिहासिक व्यक्तित्व के संबंध में अधिक ओजस्वी शैली में रचित गेय लोक गाथाएँ आदिकाल से ही प्रचलित रही है। इसे लोक महाकाव्य भी कहा जा सकता है। नृत्य की यह शैली अत्यधिक लोकप्रिय और मनोहारिणी है। कल्पना की उड़ान, कथानक की छवि छटा, धीरोदात नायक का इन्द्रधनुषी चरित्र यह सब मिलकर एक अपूर्व वातावरण की सृष्टि करता है। चूड़ियों के साथ ही सुनाई देती तलवार की झंकार। युद्ध और रोमांस हाथ में हाथ मिलाकर चल रहे होते। इन नृत्यों में भक्ति, प्रेम और मनोरंजन का समावेश रहता है।

शब्द कुंजी : लोकगाथा, लोक संस्कृति, नृत्य, मनोरंजन

प्रस्तावना

मिथिला की संस्कृति मूलतः कृषि प्रधान संस्कृति है। धान की खेती और चरखे का सूत, ''पान और मखान मिथिला के संदर्भ में अपना विशेष महत्व रखता है। विशेषतया वृक्ष, नदी के प्रति ममता और भक्ति दिखलाना कृषि संस्कृति की ही द्योतक है। ऐसे गीतों में कोशी गीत और कमला मैया–गीत का पृथक महत्व है। इस कोशी गीत में ग्रामदेव (डिहवार) से यह प्रार्थना की गई है कि वह कोशी नदी को समझा बुझाकर मना लें और उसे बढ़ने न दें, क्योंकि बाढ़ आ जाने से हाहाकार मच जाएगा और फिर नाव पार लगना संभव नहीं हो सकेगा।

गोर तोरा लागै छियो हो डिहवार।
तारू बैड़ा कोशी माय के दियौ ने मनाय।
घड़ी एक चललौ कोसी माय पहरगो बीति गेलई।
वेरिया मंडल छैक कोई नहि लागइ छै गोहारि।।

कोशी की भीषण बाढ़ का वर्णन अत्यधिक हृदय द्रावक है।

खाइयो ने भेलै आमुन जामुन फलवा
बान्हियो ने भेलै, नामी नामी केसबा के जुड़बा
भौग लैले जीवकाल हे कोशी मैया।

सेवा भक्ति त्याग और संतोष की भीति पर मैथिल संस्कृति का निर्माण हुआ है। जनक, याज्ञवल्क्य की इस मिथिला नगरी में संतोष को अधिक महत्त्व दिया जाता रहा है। महापंडित अयाची जैसे अवतारी पुरूषों ने सवा कट्ठा भूमि से ही प्रसन्नता पूर्वक निर्वाह की परम्परा दी है।[1] मैथिल लोकगीतों में ऐसा भाव मिलता है कि स्वस्थ शरीर तीर्थ यात्रा के लिए है और पुत्र प्यासे को पानी पिलाने के लिए

बैजू के दरबार में हम त खुशी सँ रहबइ ए।
कथी लागि अनधन सोना
कथी लागि रूप
कथी लागि निरमल काया
कथी लागि पूत हम तें खुशी सँ रहबई ए।

लुटबै लागि अनधन सोनमा
देखबै लागि रूप
तीर्थ चलइ लेल निरगल काया
जल भरि लाबइ पूत हम तें खुशी सैं रहबइ ए।

मिथिला की संस्कृति में लोक गीत इस प्रकार घुल मिल गये हैं कि उनके बिना उसका लोक–संगीत ही सूना है। मिथिला का लोक जीवन वस्तुतः लोकगीतों द्वारा ही संचालित है। इन्हीं लोकगीतों के सहारे यहाँ के आचार–विचार व्यवहार और हास परम्पराएँ आदि प्रतिबिंबित होती हैं।

मिथिला के लोकगीत जनजीवन की सी सरलता लिए हुए है। यहाँ की तो परम्परा ही है :

कोकटी धोती, पटुआ साम
तिरहुत गीत भरल अनुराग।
भाव भरल तन तरूणी रूप
एतवै तिरहुत होइछ अनूप।

मिथिला में विषेष अवसर पर पाग पहनने की प्रथा रही है। माथे पर पाग, कंधे पर डोपटा, अंगोछा, ठेहुने तक धोती बस यही वस्त्र होती है मैथिल की। यही कारण है कि चन्दा झा अपने इष्ट शिव से कहते हैं कि जरा अपनी जटा को ठीक से सिमट ले अन्यथा वे उन्हें पाग कैसे पहनाऐंगे।

समटु–समटु शिव सिर जट, अछि लट–पट,
पहिराएव कोना पाग, धुनडिहक संकट।

लोकगीतों ने शिव को भी निर्देशित किया है

चलु शिव कोबराक चालि हे, दोपटा ओढ़ू भोला।
अछि भरि नगर हकार हे, भल मानुष टोला।।

मिथिला के जन जीवन के हास्य और रूदन, उत्सव और मातम, हर समय के अनुकूल लोकगीत मिलते हैं। अत्यधिक विस्तृत मैथिल लोक संगीत की निम्नलिखित कोटियाँ निर्धारित की जा सकती है। संस्कृत आदि के आधार पर जन्म से लेकर मरण संस्कार तक के लिए मिथिला के अनुकूल लोकगीत का प्रचलन है। नाना प्रकार के सुख तथा दुःख के भावो से भरे लोकगीत गाने की परम्परा यहाँ युगों से चली आ रही है। जैसे, सोहर, लग्नगीत योग उचिती, समदाओन, तिरहुत, बटगमनी, मृतयुगीत आदि। धार्मिक संस्कारादि के आधार पर मनौतियाँ (कोबला पार्त) के लिए श्रद्धा तथा भक्ति के अनुसार देवी–देवताओं के प्रति निवेदित गीत आदि इस कोटि में परिगणित किये जा सकते हैं। जैसे–छठ के गीत, भगवती के गीत, महेशवाणी, शीतला माता के गीत विष्णुपद नदी के गीत (कमला, गंगा तथा कोशी नदी के गीत) साँप (विषहरा) के गीत, कमरथुआ, ब्रह्म देवता, झिगिया, जालपा, गैया, काली, बन्नी–झरनी आदि गीत। वृत्ति के आधार पर इसके अन्तर्गत विभिन्न वर्गों में जीवन निर्वाह के निमित परिश्रम करने के समय गाये जाने वाले लोकगीत आते हैं। जैसे चांचर जाति के गीत (जतसार), खोदपाड़नी आदि गीत।[2]

ऋतू संबंधित गीत : मिथिला में ऋतुओं के आधार पर जन–जीवन के सुख शांति स्वास्थ्य तथा सौन्दर्य के लिए ये गीत प्रचलित हैं– फाग, चैतावर, बसन्त मधुवनी, बरसाइत, पावस, मलार, झूला, साँझ, नृत्य के गीत पराती, बारहमासा चौमासा आदि। मिथिला में कुछ जातियाँ हर्षोल्लास के समय उत्सव मनाती और पुरूष तथा नारी नृत्य के साथ गीत गाते जैसे झूमर जट्ट जट्टिन, श्यामा चकेबा, रास, नटुआ और विपटा का नृत्य–गीत आदि। सामाजिक आर्थिक राजनीतिक आधार पर कुछ लोकगीतों के स्वरूप ऐसे हैं जिनमें सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिकि उत्थान पतन की गाथा की गई है। जैसे–नचारी, कोशी मैया का गीत, सत्याग्रह गीत, राम राज बूढ़े का व्याह, भूदान, गाँधी बाबा के गीत आदि। अन्य गीत जहाँ सामान्य गीतों के क्रम में शिशु गीत लोगरी, विरहा, निर्गुण, कीर्तन, उदासी, ग्वालरि, तुलसी उद्यापन आदि की चर्चा की जा सकती है वहीं विशेष गीत के क्रम में लोरिक, सलहेस, दीना–भद्री, रन्नू सरदार आदि की चर्चा करनी ही होगी।[3]

कृषि युग देवयुग सामन्ती युग कविवादी युग से गुजरती हुई मैथिली लोक–संगीत की परम्परा निरंतर विकसित होती रही। मैथिल लोक कला ने भी लोक–संगीत को एक आधारभूमि दी है। टकुरी–सूत, मौनी पौती, सीक का काग पुरहर पातिल, आलेपन, विवाहादि संस्कारावसर पर की चित्रकारी आदि के समय गाये जाने वाले कतिपय मैथिली लोक–गीत हैं।

मैथिल लोक संगीत के विकास में मिथिला की लोक नृत्य परम्परा का भी महत्वपूर्ण हाथ रहा है। लोक नाट्यो की सुदीर्घ परम्परा आज भी लोक गीतों के मर्म को हृदयस्थ की हुई है। नृत्य और संगीत में परस्पर अन्योन्याश्रय संबंध है। संगीत

में भी ताल है और नृत्य में भी लय। वस्तुतः ये दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। मैथिल लोक–संगीत की विकास भूमियों के अध्ययन के क्रम में मैथिल लोक नृत्य का वर्णन–विश्लेषण अनिवार्य प्रतीत होता है।[4]

मिथिला में लोक संगीत परम्परा के विकास को तीन भागों में बांटा जा सकता है। (क) विद्यापति के समय (1400) से लेकर ओइनवार राज्यवंश के पतन तक (ख) 1527 से महाराज महेश्वर सिंह के राज्यकाल के अन्त तक (ग) मिथिला राज के कोर्ट ऑफ–वार्डस द्वारा शासन भंग (1860) से आज तक। अद्‌भुत शैली का प्रभाव प्रायः सभी भारतीय भाषा कवियों, लोकगीतकारों पर कमोवेश अवश्य पड़ा है। सोहर, बटगमनी मलार, समदाओन का इतिहास मैथिल संस्कृति के इतिहास के संग ही जुड़ा हुआ है। विद्यापति की पदावली में जिसे प्रकार आगे की भाषा का मधुर प्रयोग किया गया है उसका प्राचीन स्वरूप अनेक प्राचीन कवियों के पदों मे ंसहजता से देखा जा सकता है।

सम्पूर्ण मिथिला में फैली मैथिली लोक–गीत धारा के असंख्य घाट हैं।[5] इसका वैशिष्ट्य यह है कि जहाँ सभी घाट सुन्दर, मनोहर है वहीं लोकमय स्वच्छ जल में सूरमय पवन के सुखद संयोग से रागमय कमल प्रस्फुटित हो रहे हैं। मिथिला में वर्तमान समय में प्रचलित लोक–गीत शैलियों के प्रमुख शीर्षक है :

गोसाउनिक गीत, मोरीक गीत, जीवछक गीत, कबूतरा माईक गीत, ज्वालामुखीक गीत, शीतला माइक गीत, विषहरिक गीत, गंगाक गीत, कमलाक गीत, कोसी गीत, भगवानक गीत, धर्मराजक गीत, महेशवाणी नचारी, भैरवक गीत, हनुमान जीक गीत, बहाक गीत भजन, गणेश जीक गीत, मजियाक गीत, बालापीरक गीत, अनन्त पूजा गीत, गोधन फेकैक गीत, नगनिष्पीक गीत, बरसाइतक गीत, भरदुतियाक गीत, मधुश्रावणीक गीत, श्यामा चकेबा गीत, विदेशिया गीत, घौटोक गीत सोहर गीत, जुटिकाबन्धन गीत, परिछनिक गीत, स्नानकालक गीत, जनेऊक गीत, गोरलग्गी, साँझक गीत, तुलसिका गीत, उबटन लगेबाक गीत, ऑम उमारबाक गीत, कन्यादानक गीत, कुमार, कोहबर गीत, आमौ वियाहैक गीत, उचिती, ओठगर, औठा पकड़वा कालक गीत, कुमार कमर खोलाइ, बेटा कुमार, बेटी कुमार, खोइछ झारैक गीत, डहकन योग, घोघटक गीत, चुमाओनक गीत, चौठारीक गीत, जेवनारक गीत, ठकवकक गीत, दहनहीक गीत, देह रीछकावक गीत, धुरछकक गीत, धोबिन सोहगक गीत, सोहागक गीत, निरीक्षणक गीत नैना जोगिनक गीत, पचीसीक गीत, परिछनि पाग उतारैक गीत, लहछूक गीत, कजरी, मलौर फाउग, बसन्त, चैतावर, तिनमासा, चौमासा, पंचमासा, बारहमासा, लगनी, रोपनी, चरखाक गीत, उखरि कुटबाक गीत, आरती, उतरा चौड़ी, उदासी, झुझुरकोना, रजकोतवाल, कबड्‌डी, करिया–झुमरि, ग्वालरी गोधना, झूमर झूला, तन्त्र मन्त्रक गीत, भगताक गीत, देह बन्हबाक गीत, नजरि उतारवक गीत, भूत–प्रेत बाधा मुक्तिक लेल मंत्र गीत, बिच्छू मारबाक मन्त्र गीत, तिरहुत, पराती, बटगमनी, विहाग, रास, शिशु गीत, साँझ तथा मृत्यु गीत, उदासी, गीत गोविन्द, सरा आदि।

निष्कर्ष :

मैथिली लोक नृत्य का अपना पृथक इतिहास है। इसकी पौराणिकता पर संदेह नहीं किया जा सकता है। वस्तुत लोक संगीत को जीवित रखने का नृत्य सशक्त माध्यम है। नृत्य और संगीत मैथिल लोक–जीवन में घुल मिल गया है। मिथिला की नृत्य शैलियों में इतनी सजीवता और जीवन्तता है कि इसे मैथिली की सर्वप्राचीन गद्य ग्रंथ वर्ण रत्नाकर में ''लोरिक नाच्यो'' के रूप में वर्णित किया गया है। वैसे भी मैथिली की नृत्य शैलियों की प्रामाणिकता के कतिपय साक्ष्य हैं। किन्तु इसका सबसे बड़ा प्रमाण है आज भी जीवित इसका वास्तविक प्रचलित सुरक्षित स्वरूप।

संदर्भ :

1. झा, एस. के. एवं झा बी.दि. इकोनोमिक हेरिटेज ऑफ मिथिला पृ. –198
2. राम ज. महेन्द्र रमण, मैथिली लोक महागाथा, कारिख पंजियार,
3. श्रीष, मैथिली साहित्यिक इतिहास, पृ.–39
4. मिथिला शोध संस्थान, शोध पत्रिका, मिथिला की लोक संस्कृति विषेषांक,पृ.–236 –38
5. संगीत, लोक संगीत अंक, 1966, पृ.–12